Part I Hons.

Paper II
Gr. B

मौर्यकालीन आय एवं व्यय

10. Main Sources of revenue of the Mauryan State
or
Sources of Income & Expenditure of the Kautilyan state or ancient India.

Ans → मौर्य साम्राज्य के आय के साधन अनेक थे। भात से लेकर तला मछली तक प्रत्येक चीज जो शहर में लाये जाते थे उनपर कर वसूल किया जाता था और शहर के दरवाजे पर उनपर मोहर मार दिया जाता था। कौटिल्य ने आय के साधनों को उनके स्रोत के आधार पर विभिन्न भागों में बाँटा है। राज्य का आय था तो जीवन के राजस्व (पार्थिव) या भूमि राजस्व के अलावा दूसरे चीजों (अपार्थिव) से होता था। भूमि राजस्व की आय का मुख्य स्रोत था। भूमि राजस्व का ६ वाँ भाग से लेकर जरूरत के समय ४ वाँ भाग के बीच में होता था। ~~भूमि राजस्व का ६ भाग से लेकर जरूरत के समय ४ वाँ भाग के बीच में होता था~~ कौटिल्य के अनुसार भूमि राजस्व कर उपज का ६ वाँ भाग होना चाहिए, लेकिन जमीन यदि उपजाऊ न हो तो यह कम हो सकता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से यह भी ज्ञात होता है कि राज्य का यह प्रयत्न रहता था कि परती जमीन पर भी खेती किया जाय।

जलकर अर्थात सिंचाई कर, अर्थात भागकर या हाट में बेचने वाले सामान पर कर एवं चुंगी आदि भी साधारणत: भूमिकर में ही आ जाता था।

मौर्यकाल की आर्थिक पद्धति बहुत उन्नत रूप में थी। कर पद्धति भी काफी भारी एवं पेचीदा था। भूमिकर के अलावा बहुत से अन्य कर जैसे बलि, पिंडकर आदि थे। लेकिन इनका वास्तविक अर्थ अभी तक हमें पता नहीं चला है। बलि के अधीन राजा द्वारा किसानों से लिए गये कुछ अनियमित कर आते थे। भारतीय कर पद्धति का जन्म राजा के अधिकारों एवं कार्यों में वृद्धि का प्रतीक है। एम. एम. गोपाल के अनुसार अतीत से कर भी अर्थात अर्थशास्त्र में उसके छठे भाग के

के रूप में वर्णित है सिंचाई कर के रूप में लिया जाता था। लेकिन घोषाल के अनुसार केवल यही कर नियमित रूप से उपज में से राजा द्वारा लिया जाता था। भद्रस्वामि ने पिंडकर को पूरे गाँव पर लगाया गया मान्य कर कहा है जो साल में एक बार वसूल किया जाता था। अन्य करों के मध्य "कर" और 'प्रतिकर' का उल्लेख मिलता है जिसके बारे में कहा गया है कि समाहर्ता उसे गाँव से वसूल करता था और इसके बारे में उसे "कर" पुस्तिका में अलग से उल्लेख करना पड़ता था। कौटिल्य के स्रोत के आधार पर आय के साधनों को विभिन्न भागों में बाँटा है जो निम्नलिखित है —

(i) राष्ट्र — राज्य से आय

(ii) सीता — राजा की भूमि से आय

(iii) भाग — निजी भूमि से आय

(iv) बली — जमीन से प्राप्त विशेष आय जो धार्मिक कार्यों के लिए लिया जाता था।

(v) कर — अनेक नगदी आय

(vi) तट और नाव — नाव, जहाज एवं नदी में पार जाने पर लिये जाने वाले कर से आय

(vii) वर्तम् — सड़क एवं चुंगी से आय

(viii) खनी — खदानों से आय

(ix) दुर्ग — शहर से आय

(x) वन — जंगल से आय

(xi) नदी पाल — नदी अध्यक्ष को देने वाले कार से आय

(xii) पट्टन — शहर के बाजार में दिये जाने वाले कर

~~(xiii) विविध — से आय~~

(xiii) विविध — चारागाह कर से आय

(xiv) रज्जू — व्यवस्था अध्यक्ष को बसने पर दिये गये कर से आय

~~(xv) मोर~~

(xv) मोर रज्जू — चौकीदारी या पुलिस कर से आय

Scanned with CamSc

नगरों से आय के स्रोत इसके अतिरिक्त भी थे जैसे आर्थिक दंड, नाप तौल का लाइसेन्स, पासपोर्ट जारी करने का फीस जेल, जुआघर एवं कसाई खाना से आय, नमक टैक्स, चुंगी और व्यवस्था कर। इसके अलावे नशीले पदार्थ की बिक्री से आय विभिन्न जानवरों एवं मवेशियों पर कर आदि से भी राज्य कोष को आय था। इसके अतिरिक्त बाहर से मनाए जाने वाले आराम के साधनों पर काफी अधिक कर बैठाया गया था। राजा को दिये गये उपहार भी आय के एक प्रमुख स्रोत थे। भट्टस्वामी के अनुसार "उत्संग" नगर एवं ग्रामवासियों द्वारा किसी खुशी के मौके पर जैसे राजकुमार के जन्म आदि पर राज्य को उपहार दिया जाता था। "औपमिक" एवं अवर्णित कर है। "पर्श्व" अधिक लाभ होने पर लिया जाता था। "कौष्ठेयक" वैसे जमीनों पर कर था जो राज्य द्वारा बनाये गये नहर, कुआँ आदि के पास होता था। "परीहिनक" मवेशियों द्वारा राजा के खेत को क्षति पहुँचाने पर लिया था।

कौटिल्य ने आय के स्रोतों को विभिन्न हिस्सों में बाँटा है, जिसे फिर 67 भागों में बाँटा गया है।

(i) दुर्ग — (किलाबंद शहर) में 22 सामग्रियाँ हैं- चुंगी, दंड, तौल, नाप और गेट पर लिये जाने वाले विभिन्न कर

(ii) राष्ट्र में 13 सामग्रियाँ हैं जिनसे मुख्य बील, धार्मिक करें एवं नगद करे हैं।

(iii) 12 प्रकार के खदान — स्वर्ण, चाँदी, हीरा, कीमतीपत्थर लोहा, नमक, मोती, मूंगा, कौड़ी या शंख आदि।

(iv) ध्या 6 प्रकार के सिंचाई के साधन।

(v) 3 प्रकार के जंगल

(iv) 8 प्रकार के मवेशी

(vii) 2 प्रकार के व्यापार मार्ग (वणिक पथ)

इसी प्रसंग में उसने स्रोतों की एक छोटी सूची का भी उल्लेख किया है।

Scanned with CamSc

(A) (1) मूल — (लाभ के लिए लगाया गया धन)
(2) भाग — (राजा का हिस्सा)
(3) व्याजी — (क्षतिपूर्ति)
4) परिघ — (दरवाजा बन्द)
5) क्लृप्त — (नियमित कर
6 रूपिक — (अलग)
7) अत्यय — (आर्थिक दंड)
8) सीता — (खेतों का उपज)
9) बलि — (राजा का रसीद)
10) वर्तनी — (नगर के रास्तों पर कर)
11) सेनाभक्त — (सेना के लिए भोजन
12) उत्संग — (अनियमित निरूपण)
13) पार्श्व — अधिक निरूपण)
14) कर — अवधि पर लिया जाने वाला कर)
15) षड्भाग — ⅙ वाँ भाग

B(1) चीजों के बिक्री पर कर एवं आयात की निर्यातपरक
(2) सड़क कर, नहरकर, नदी में पार उतरने का कर, आने जाने पर कर, चुंगी एवं पासपोर्ट फीस
(3) कारीगर एवं मल्लाहों पर कर
4) वेश्या, जुआ, कसाईखाना, धन एवं एकाधिकारफा
5) अपराधियों न्यायालयों से दंड,
6) आकस्मिक आय
7) ऋण पर व्याज एवं अन्य कर

विभिन्न स्रोतों से जमा किये गये धन राजा की शान कायम रखने, राज्य को सुरक्षित रखने और राज्य द्वारा अन्य कार्यों में खर्च किया जाता था।

- निम्नलिखित कार्यों पर अधिक व्यय होता था —
(i) राजमहल का निर्वाह
(ii) धार्मिक जगहों का निर्वाह
(iii) अधिकारियों का वेतन

Scanned with CamSc

(iv) सेना और नौ सेना का निर्वाह
(v) खदान और कार्यालयों का निर्वाह
(vi) मजदूरों का निर्वाह
(vii) किसानों का निर्वाह
(viii) विधवाओं, शारीरिक रूप से विक्षिप्तों एवं अनाथों का निर्वाह
(ix) मृत अधिकारियों के सम्बन्धियों का भत
(x) लोक निर्माण एवं सड़कों, नहरों, आदि की रक्षा।

खेती के विकास के लिए काफी पैसा खर्च किया जाता था। अकाल के समय ऋण दिये जाते थे। राज्य के कार्यालयों पर ~~लिखे~~ लिये गये खर्च के बारे में कौटिल्य ने वर्णन किया है। विभिन्न अधिकारियों के वेतन का उल्लेख भी अर्थशास्त्र में है। इसके अलावा अस्पताल, स्कूल, भिक्षागृह, मठ, मंदिर आदि की ओर भी राज्य ध्यान देती थी।

अधिक व्यय लोक निर्माण के कर्मों पर होता था। भिक्षागृह द्वारा भिक्षा सभी जरूरतमंद व्यक्तियों को प्रदान किया जाता था। मौर्यकाल में यात्रियों के लिए सड़क के किनारे आरामगृह, एवं राज्यभर में आदमी एवं मवेशी का अस्पताल भरा हुआ था। नहर, तालाब, कुआँ एवं सिंचाई के अन्य साधनों का निर्माण प्राय: राज्य के द्वारा किया जाता था। अकाल, आगजनी, आदि के समय राज्य की ओर से सहायता कार्य किये जाते थे। चोरी गये माल प्राप्त न होने पर मालिक को राज्यकोष से उस माल की कीमत मिल जाता था। काफी मात्रा में धन युद्ध राजकुमार के जन्म आदि अवसरों पर खर्च किया जाता था।

हमारे स्रोतों में राज्य के व्यय के सम्बन्ध में क्रमबद्ध उल्लेख नहीं है। इस बात पर सबों ने सहमति है कि असाधारण समयों में राजकोष खाली नहीं होना चाहिए। लड़ाई के लिए सतत तैयार के चलते एक सेना की जरूरत थी जिस पर काफी

Scanned with CamScanner

खर्च था। अर्थशास्त्र में व्यय का उल्लेख केवल राज्यकोष
में आये धन का किया गया है। लेकिन कौटिल्य और
मेगास्थनीज के अनुसार शहर की नगरपालिकाओं के आय
का स्त्रोत अलग था और उसी प्रकार गाँव का शासन
गाँव के विकास के लिए जिम्मेवार था। राज्य की मदद
भी उसे मिलता था। उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए
राज्य शिक्षकों एवं विश्वविद्यालयों को समुचित दान
देता था। राज्य के बेकारों को नौकरी एवं बूढ़े, बीमार
एवं जरूरतमंद व्यक्तियों को आश्रम प्रदान करना पड़ता
था और यह राज्यकोष पर एक बहुत बड़ा भार था